27.8.65 R-रात के राही.....ओमशांति। बच्चों ने इस गीत की एक लाइन से ही समझ लिया। बाबा जब बच्चे2 कहते हैं तो सदैव समझना चाहिए हम आत्माओं को बाप बैठ समझाते हैं। आत्मअभिमानी बनना है यह तो सब जानते हैं। आत्मा और शरीर दोनों चीजें हैं ; परंतु यह नहीं समझते हम आत्माओं का बाप भी है। हम निर्वाणधाम में रहने वाले हैं। यह बातें बुद्धि में नहीं आती हैं। बाप कहते हैं ना यह ज्ञान बिल्कुल प्रायःलोप हो जाता है। मनुष्यों के कर्तव्य बिल्कुल बंदर जैसे हैं। बाकी यह तो जानते हैं आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। बस। और कुछ नहीं जानते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो यह नाटक पूरा होता है। हमको वापिस जाना है। अपवित्र पतित आत्मा वापिस जा नहीं सकती। कोई भी आत्मा वापिस गई नहीं है। आती ही रहती है। कोई कितना भी ब्रह्म ज्ञानी वा तत्व ज्ञानी हो वपिस एक भी नहीं जा सकते। यह ड्रामा है। जब सब आत्माएं यहॉ चली आती हैं फिर वापिस जाने लगती हैं। यह तो अभी तुम जानते हो बाप हमको रुहानी रास्ता सिखला रहे हैं। कहते हैं हे आत्माएं अब बाप को याद करने की यात्रा करनी है। जन्म–जन्मांतर तो जिस्मानी यात्रा करते आए हो। अभी तुम्हारी है रुहानी यात्रा। जाकर के फिर इस मृत्युलोक में वापिस आना नहीं है। मनुष्य जिस्मानी यात्रा पर जाते हैं तो फिर लौट आते हैं। वो है जिस्मानी देह अभिमानी यात्रा। अभी यह है रुहानी यात्रा। सिवाय बेहद के बाप के यह कोई यात्रा सिखलाय ना सके। तुम बच्चों को श्रीमत पर चलना है। तुम बच्चों का सारा मदार यात्रा पर है। जो बच्चे जितना याद करते हैं। याद कायम उनको रहेगी जिनको कुछ ना कुछ ज्ञान है। 84 जन्मों के चक्कर का भी ज्ञान है ना। अभी हमारे 84 जन्म पूरे हुए। यह 84 जन्मों के चक्कर की यात्रा है। इनको कहा जाता है आवागमन की यात्रा। आवागमन तो सभी का चलता रहता है। आना और जाना। जन्म लेना और छोड़ना इसको आवागमन कहा जाता है। अभी तुम इस मृत्युलोक के आवागमन से छूटते हो। यह है सुखधाम। अभी तुम्हारा जन्म–मरण अमरलोक में होना है जिसके लिए तुम पुरुषार्थ करते आए हो अमरनाथ पास। तुम सब पार्वतियॉ हो। अमरकथा किससे सुनती हो? जो सदैव अमर है। तुम सदैव अमर नहीं हो। तुम तो जन्म–मरण के चक्कर में आती हो। अभी तुम्हारा चक्कर नर्क में है। इससे तुमको छुड़ाय तुम्हारा आवागमन स्वर्ग में बनाते हैं। वहॉ तुमको कोई दुःख नहीं होगा। यह है तुम्हारा अंतिम जन्म। तुम देखते जावेंगे कैसे विनाश होता है। यह जो माथा मारते हैं लड़ाई ना हो। या कहते हैं बाम्ब्स जाकर समुद्र में डाल देवें। यह तथ्य ड्रामा अनुसार बिचारे कहते रहते हैं। अमेरिका में कोई चरिया–खरिया हजाम था वो भी कहे मैं प्रेजीडेंट बनूँगा। जिसको जो आता वह बोल देते हैं ; क्योंकि यह दुनियॉ है ही मैड चैपस (पागल मनुष्यों की) श्री2 108 जगतगुरू कहलाने वाले बड़े2 गुरू हैं जिनके लाखों फालोअर्स हैं। आगाखॉ के कितने फालोअर्स हैं। कब उनको सोने में कब हीरों में वनज करते हैं। अब वो सारा दिन करता क्या है?तो यह सब अंधश्रद्धा हुई ना। बाबा ने कहा है यह सब अंधों की औलाद अंधे हैं। अंधे क्यों हैं?क्योंकि सब आसुरी मत पर हैं। रावण राज्य है ना। तुम अभी संगम पर हो। और दुनियॉ के मनुष्यों के लिए कलियुग अजुन शुरू होता है। 40 हजार वर्षों बाद कोई के लिए संगम आना है। यह रोग निकला है शास्त्रों से। इसलिए बाप कहते हैं तुम जो कुछ वेद–शास्त्र आदि पढ़ते हो , दान–पुण्य आदि जन्म–जन्मांतर करते आए हो यह सब है भक्तिमार्ग । भक्ति से दुर्गति होती है। नए मकान को सदगति पुराने को दुर्गति कहेंगे ना। दुर्गति को देख मालिक को रहम आता है अब नया बनावें। यह भी दुर्गति से फिर सदगति जरूर होनी है। सारी दुनियॉ सदगति में थी। तुम जानते हो बरोबर भारत में हम ही सदगति में थे। हम ही फिर दुर्गति में आए हैं। .....ब्राह्मण फिर देवता बनते हैं। ब्राह्मण वर्ण है ऊँच। यह तो प्रैक्टिकल बात है। ब्राह्मण बनने बिगर कोई देवता वर्ण में आ नहीं सकते। तुम निश्चय करते हो हम ब्रह्मा के बच्चे हैं। शिवबाबा से दैवी राज्य ले रहे हैं। अभी तुम्हारा पुरुषार्थ चलता

है रेस करने पर। अच्छी रीति पढ़कर दूसरों को पढ़ावें। लायक बनावें। जिनको रावण ने नालायक बनाया है उनको लायक बनावें तो वो भी स्वर्ग के सुख देखें। कृष्णपुरी को तो सभी याद करते हैं। रामचंद्र को छोटेपन में झूला आदि नहीं झुलाते हैं। कृष्ण को बहुत प्यार करते हैं ; परंतु अंधश्रद्धा से। समझते कुछ भी नहीं हैं। बाप ने समझाया इस समय यह काली सृष्टि है। भारत बहुत सुंदर था। गोल्डन एज में था। अभी आयरन एज में है। तुम भी आयरन एज में थे। अब फिर तुमको गोल्डन एज में जाना है। बाबा सोनार का काम कर रहे हैं। तुम्हारी आत्मा में जो लोहे और तॉबे की खाद पड़ी है वो निकाली जाती है तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों अभी झूठे बन गए हैं। अब फिर तुमको सच्चा सोना बनना है। सच्चे सोने में बहुत खाद मिलाने से एकदम मुलमा बन जाता है। तुम्हारी आत्मा में भी अभी बिल्कुल थोड़ा सोना जाकर रहा है। जेवर भी पुराना है। 2 कैरेट सोना कहेंगे। तो बाप बैठ समझाते हैं भारत की मत इस समय मारी हुई है। जब मत मारी जाती है तब ही बाप द्वारा फिर श्रीमत मिलती है। भारत बरोबर स्वर्ग था। दूसरे कोई धर्म का राज्य न था। फिर हम उस स्वर्ग में जावें इसके लिए पुरुषार्थ करना है ; परंतु माया करने ना देती है। माया तुम्हारा बहुत सामना करती है। युद्ध के मैदान में तुमको बहुत हराती है। चलते2 कोई ना कोई तूफान आ जाते हैं। विकार में जाते हैं तो बिल्कुल ही काला मुॅह मत कर देते हैं। बाप कहते हैं अभी मैं तुम्हारा गोरा मुॅह करता हूॅ। अब फिर विकार में जाय काला मुॅह मत करो। योग से अपनी अवस्था को शुद्ध बनाओ। शुद्ध होते2 खाद सारी निकल जावेगी। इसलिए योग अगन की भट्ठी में रहना है। सोनार लोग इन बातों को अच्छी रीति समझेंगे। सोने की खाद निकलती है आग में डालने से। फिर सोने की डली सच्ची बन जाती है। बाप कहते हैं अभी तुम जितना याद करेंगे उतना शुद्ध बनते जावेंगे। बाप तो श्रीमत देंगे और क्या करेंगे। कहते हैं कृपा करो। अब इसमें बाबा कृपा क्या करेंगे। बाबा तो कहते हैं याद में रहो तो खाद निकलती जावेगी। तो याद में रहना है कि कृपा वा आशीर्वाद मॉगना है। इसमें तो हरेक को अपनी मेहनत करनी है। बाकी कहते हैं हे रुहानी बच्चे इस रुहानी यात्रा में थक मत जाओ। घड़ी2 बाप को भूल मत जाओ। जितना याद में रहते हो उतना समय जैसे कि तुम भट्ठी में हो। याद ना करते हो तो भट्ठी में नहीं हो। तुमसे विकर्म बन जाते हैं और फिर एड भी हो जाता है। और ही काले बन पड़ते हो। मेहनत कर गोरा बन फिर काला बनते हो गोया वैसे तुम काले थे। अब फिर 100 परसेंट काले बन पड़े हो। काम विकार ने ही तुमको काला किया है। वो है काम चिक्षा। यह है ज्ञान चिक्षा। मूल बात है ही काम की। घर में झगड़ा ही इस पर होता है। कुमारियों को भी समझाया जाता है अभी तुम पवित्र हो , अच्छी हो। कुमारी को सभी पॉव पड़ते हैं ; क्योंकि पवित्र है। अभी तुम सब बी.के. हो। अभी भारत को स्वर्ग बनाया है तो तुम्हारा यादगार भक्तिमार्ग में चला आता है। कुमारियों को बहुत मान देते हैं तो ब्रह्माकुमार भी ; परंतु मैजारिटी इन माताओं की है। बाप खुद आकर कहते हैं वंदे मातरम्। तुम बाप को वारिस बनाते हो। भक्तिमार्ग में तुम ईश्वर को दान क्यों देते हो?बाप तो बच्चों को देते हैं ना। फिर ईश्वर को दान क्यों करते हैं? ईश्वर अर्थ अथवा कृष्ण अर्थ करते हैं। कृष्ण तुम्हारा क्या लगता है जो उनको देते हो। श्रीकृष्ण को क्यों देते हो? अर्थ चाहिए ना। गरीब तो नहीं हैं। फिर भी कहते ईश्वर अर्थ। कृष्ण अर्थ तो होता है नहीं। वो तो सतयुग का प्रिंस है। बाप समझाते हैं सभी की मनोकामनाएं मैं ही पूरी करता हूॅ। फल मैं ही देता हूॅ। कृष्ण तो तुमको दे नहीं सकता। वो कृष्ण को ईश्वर समझ अर्पण करते हैं। वास्तव में फल देने वाला तो मैं हूॅ। भक्तिमार्ग की सब बातें समझाई जाती हैं। शिवबाबा के भंडारे में देते हो। क्यों?शिवबाबा गरीब है क्या? तुम तो बच्चे हो ना। शिवबाबा को तुम देते हो जरूर बच्चा ठहरा ना। भक्तिमार्ग में भी बच्चा है , यहॉ भी बच्चा है। भक्तिमार्ग में अल्पकाल लिए एवजा मिल जाता है। अभी तो है डायरैक्ट। इसलिए तुमको 21 जन्म लिए वर्सा मिलता है। यहॉ तो बलि चढ़ना पड़े। तुम एक बार बलि चढ़ते हो तो यह 21 बार तुम कौड़ी ले आते हो बाबा से हीरा लेने लिए। अंदर में समझते हो इस चावल मुट्ठी शिवबाबा के

भंडारे में डालते हैं। सुदामा की बात अभी की है। शिवबाबा तुम्हारा क्या लगता है जो तुम उनको देते हो? .....है तो तुम बड़े ठहरे ना। समझते हो एक देवें हजार , लाख पावें। देने वाला दाता वो एक है। साधु लोग तुमको कुछ देते नहीं हैं। भक्तिमार्ग में भी मैं दाता हूँ। अभी भी मैं दाता हूँ। इसलिए बाबा पूछते हैं.....बच्चे हैं। फिर कोई को समझ में आता है कोई को समझ में नहीं आता है। अभी तुम जानते हो हम शिवबाबा पर बलि चढ़ते हैं। हमारा तन , मन, धन सब उनका है। वो फिर हमको 21 जन्म का वर्सा देंगे। साहुकार का हृदय विदीर्ण होता है। बाकी हैं अबलाएं। बाप का नाम ही है गरीब निवाज। बाप कहते हैं तुमको अपना गृहस्थ व्यवहार भी सम्भालना है। ऐसे नहीं कि तुम यहॉ बैठ जाओ। सिर्फ श्रीमत पर चलते रहो। सबसे आसक्ती निकल जाए। माम एकम् याद करो। भक्तिमार्ग में भी तुम गाते थे मेरे तो एक दूसरा ना कोई। गीता भागवत में भूल से कृष्ण का नाम डाल दिया है। अभी तुम समझ गए हो श्रीकृष्ण के 84 जन्मों को तुम जानते हो। जो जानते हैं उनको ही नालेजफुल कहेंगे। बाकी 84 लाख जन्म थोड़े ही होते हैं। 84 जन्म भी सब नहीं ले सकते। इतनी सहज बात भी विद्वान, आचार्य, पंडित नहीं जानते। विचार, सागर, मंथन नहीं कर सकते। 84 लाख जन्म मनुष्य के हो कैसे सकते?84 लाख जन्म समझने कारण ड्रामा की आयु लाखों वर्ष लिख दी है। कितना घोर अंधियारा है। बाप समझाते हैं घोर अंधियारे से पहले कौन निकलेंगे?जो पहले नम्बर में आए हैं। अब घोर अंधियारे में तुम थे ना। फिर तुमको ही घोर सोझरे में जाना चाहिए। कितनी बातें समझाई जाती हैं। कितनी बातें समझाई जाती हैं। सब तो एक जैसी समझ वाले नहीं होते हैं। पिछाड़ी में निकलेंगे। फिर तुम्हारे में बल भी .....। सुनने से ही झट आकर पकड़ेंगे। निश्चय हो बाप हमको स्वर्ग का मालिक 21 जन्म लिए बनाने आया है। तो एक सेकेंड भी ना छोड़े। यह बाबा भी अपना अनुभव सुनाते हैं ना। यह तो जवाहरी था। बैठे2 इनको क्या हुआ?बस देखा बाबा द्वारा बादशाही मिलती है। विनाश भी देखा था। फिर राजाई भी देखी तो बोला छोड़ो इस गधाई को। बाबा इनमें बैठा हुआ था। सा. भी हुआ ; परंतु ज्ञान नहीं था। बस। सिर्फ मुझे बादशाही मिलती है। देखते हैं बाप स्वर्ग की बादशाही देने आए हैं तो फट से पकड़ना चाहिए ना। बाबा यह सब आपका है। आप काम में लगा लो। बाबा ने भी सब कुछ इन माताओं के हाथ में दे दिया। माताओं की कमेटी बनाय उन्हों को दे दिया। बाप ही सब कुछ कराते थे। समझा बाबा से 21 जन्मों लिए बादशाही मिलती है तो अब तुम भी लियो ना। बाबा ने झट गधाई छोड़ दी। जब से छोड़ा है बड़ी खुशी से चलते आते हैं। यह तो अनेक बार हमने देवी–देवता धर्म स्थापन किया है। बाबा ने बी.के. द्वारा अनेक बार स्थापन किया होगा। जब ऐसी बात है तो फिर देरी क्यों? बाबा से तुम हम 21 जन्मों का पूरा वर्सा लेंगे। बाबा घर–बार तो नहीं छुड़वाते हैं। भल उनको अच्छी रीति सम्भालो। सिर्फ याद करते रहो। नशा रहना चाहिए। हम बाप के बने हैं। बाबा को लिखते हैं बाबा फलाना बहुत अच्छा निश्चय बुद्धि है। पवित्रता की राखी बॉधी है। बाबा एक मास तो देखते हैं। लिखते हैं बहुत अच्छा निश्चयबुद्धि समझदार हैं। बहुतों को समझाते हैं ; परंतु निश्चय बुद्धि हमारे पास तो आते नहीं। बाप की गोद ली ही नहीं और मर जाए तो वर्सा कैसे मिलेगा? पहले तो बाप की गोद लेनी होती है। निश्चय हुआ और शरीर छोड़ दिया। मेहनत कुछ नहीं की। आयरन एज्ड से गोल्डन एज्ड ना बने तो कामन प्रजा में जन्म ले लेंगे। अगर गोद में आए अच्छी रीति .....। फिर शरीर छोड़े तो वारिस भी बन जाए। वारिस बनने में देरी थोड़े ही लगती है। कोई तो सूर्यवंशी राजाई पाते हैं कोई तो सर्विस करते2 पिछाड़ी में एक जन्म लिए कर ....राजाई की पद पा लेंगे। बस। वो कोई सुख थोड़े ही हुआ। राजाई का सुख तो पहले स्वर्ग में ही है। फिर कलाएं कम हो जाती हैं। बच्चों को तो पुरुषार्थ कर मॉ–बाप को फालो करना है। मम्मा–बाबा की गद्दी पर बैठने लायक तो बनो। उन में ही ऑख डूबेगी। महाराजा की छोटे2 राजाओं में ऑख थोड़े ही डूबती है। प्रिंस–प्रिंसेज की जब

जब कान्फ्रेंस होती थी तो सब नम्बरवार बैठते थे। जानते थे फलाने की राजधानी बहुत बड़ी है। बड़ा समझ उनको झुकते थे। नमन करते थे। तो क्यों ना ऊँच बनें। हार्टफेल क्यों होना चाहिए। पुरुषार्थ कर फालो करो। सूर्यवंशी गद्दी का मालिक बनो। स्वर्ग में तो आओ ना। नापास होते हो तो चंद्रवंशी में चले जाते हो। दो कला कम हो जाती है। बच्चों को नशा होना चाहिए। कोई तो बाप की आज्ञा भी नहीं मानते। बाबा से आकर पूछे हम आज्ञाकारी हैं तो बाबा फट बतलावेंगे। बाबा बच्चे2 कहते हैं ; परंतु कपूत हैं वा सपूत सो तो बाप दिल में समझते हैं। बाबा के पास एक दरबान रहते थे उनको इतनी इज्जत देते थे जो सेल्समैन को भी नहीं ; क्योंकि बड़ा ऑनेस्ट इमानदार रहता था। लाखों का सामान बाहर छोड़ तिजोरी खोल जाते थे। आते थे तो झट कहते थे बापूजी आप चाबी छोड़कर गए हैं। बाबा उनकी कितनी खातिरी करते होंगे। ऐसा हमारे पास भी फरमानबरदार बच्चे नहीं हैं। थोड़ी समझानी दो तो मुरदे बन जाते। फिर भी उनको उठाते रहते हैं। बाबा बतला सकते हैं अभी तो तुम आयरन एज से कापर एज में भी नहीं गए हो। कई ट्रेटर भी बन पड़ते तो कितना नुकसान कर देते हैं। बाप तो फिर भी मीठा है। समझते हैं ड्रामा अनुसार उनकी तकदीर में ना है। सर्विस बदले डिससर्विस करते रहते। वो क्या पद पावेंगे। अंदर रहता तो है ना। बिचारे के नसीब में कुछ नहीं है। नहीं तो श्रीमत पर बहुत श्रेष्ठ बनना होता है ; परंतु माया चलने नहीं देती है। नाक से पकड़ मुँह ही फेर देती है। श्रीकृष्ण की लात है नर्क की तरफ। हाथ में स्वर्ग है। यह भी यात्रा है ना। कहते हैं मैं आ रहा हूँ। तुम सब जानते हो हम अपनी बादशाही में आ रही है तो अस्थाई खुशी रहनी चाहिए ना। माया घड़ी2 भुला देती है। हनुमान मिसल स्थिरियम बनना चाहिए ना। माया हमको क्या कर सकती है। हम तो बाप के बने हैं। परिक्षाएं तो बहुत आवेंगी। तूफान ढेर आवेगी। रुस्तम से माया रुस्तम हो लड़ेगी। कच्चे से कच्चे मिसल लड़ेगी। विश्व का मालिक बनना कम है क्या? भगवान कहते हैं मैं विश्व का मालिक नहीं बनता हूँ। तुम बनते हो। कितना सीधा बतलाते हैं। विश्व नई दुनियॉ को कहा जाता है। तो पुरुषार्थ कर मालिक बनो ना। निष्काम सेवा सिर्फ एक बाप ही कर सकते हैं। बाकी तो सब गप्पे मारते हैं। कामना बिगर कोई पढ़ते हैं क्या? भगवानोवाच राजाओं का राजा बनाता हूँ। कामना है ना। कामना बिगर कोई धंधा नहीं कर सकते हैं। दान–पुण्य भी कामना से करते हैं ना। दूसरे जन्म में अच्छा मिलेगा। बाबा कितना अच्छा काम करते हैं। कहते हैं सबको जीवनमुक्ति देता हूँ। मैं ही हूँ निष्काम सेवा कर रहा हूँ। तुमको सुखी बनाय मैं वानप्रस्थ में बैठ जाता हूँ। वो है वाणी से परे स्थान। वापिस तो कोई जा नहीं सकते। अभी तुमको फिर नई दुनियॉ में जाना है। पहले पियर घर फिर ससुर घर जाना है। अच्छा मातपिता का सिकीलधे बच्चों प्रति यादप्यार गुडमार्निंग।

पिताश्री ऊँ रात्रि क्लास की प्वाइंट्स

भक्त समझते हैं जितना भक्ति करेंगे , धक्के खावेंगे फिर भगवान मिलेगा ; परंतु वो कौन है , कब मिलेगा यह किसको पता नहीं है। अब बाप कहते हैं तुमको कोई धक्का ना खाना है। अब सिर्फ माम् एकम् याद करो। यह है महामंत्र। बाप को याद करो और स्वर्ग का वर्सा लो। गीता में सिर्फ भूल कर दी है जो बाप के बदले बच्चे का नाम डाल दिया है। गीता खंडन होने से सब शास्त्र खंडन हो जाते हैं। वो सब हैं पत्ते। उनसे वर्सा नहीं मिल सकता। वर्सा मिलता है गीता माता से। गीता माता,अच्छा उसका पिता कौन?कहा जाता है तुम मात पिता.....तुम्हारे इस गीता ज्ञान सुनने से हमको स्वर्ग के सुख घनेरे मिलते हैं। इन बातों को तुम बच्चों में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार समझ गए हैं। यह बेहद बाप का स्कूल है। पढ़ाई तो रोज़ पढ़नी चाहिए। अगर कोई कारण है तो वो बतलाना चाहिए। पूछना चाहिए। हम इस हालत में क्या करें?हरेक बात में युक्ति बताई जाती है। अच्छा यादप्यार और गुडनाइट। ऊँ।